श्री ओम प्रकाश त्यागी : उपाध्यक्ष महोदय, मेरा पायंट आफ़ आर्डर सुन लीजिए।

श्री रवि राय : मंत्री महोदय कल इस विधेयक में संशोधन ले कर आयें। बिना संशोधन के कैसे काम चलेगा ?

17.30 hrs.

HALF AN HOUR DISCUSSION

VISIT OF KHAN ABDUL GHAFFAR KHAN TO INDIA

श्री प्रकाशवीर शास्त्री (हापुड़) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस आध घंटे की चर्चा के माध्यम से उस महान् व्यक्ति की कहानी इस सदन के सामने रखने जा रहा हूं। जिस को महात्मा गांधी के जीवन-काल में ही हमारे देशवासियों ने सरहदी गांधी या सीमांत गांधी के नाम से पुकारा। यह कहानी उस व्यक्ति की है, जिस ने गांधीजी के साथ कंधे से कंधा मिला कर देश की अखंडता और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। यह चर्चा उस व्यक्ति की है, जिस ने मुस्लिम साम्प्रदायिकता के आगे कभी घुटने नहीं टेके और जो अपने लक्ष्य के लिए स्वतंत्रता के संघर्ष में भी देश में फ़कीर बना घूमता रहा और देश-विभाजन के बाद भी जिस को पाकिस्तान की जेलों में लगभग पंद्रह वर्ष तक कारावास की यातनायें सहनी पड़ीं। देश की स्वतंत्रता से पूर्व वह व्यक्ति बारह वर्ष तक अंग्रेज़ की जेलों में रहा और बाद में पंद्रह वर्ष तक पाकिस्तान की जेलों में। जिस व्यक्ति के 27 वर्ष कारावास में व्यतीत हुए, जिस ने अन्त तक भारत-विभाजन का जम कर विरोध किया, इस आध घंटे की चर्चा के माध्यम से मैं उस व्यक्ति की ओर इस सदन और इस सरकार का ध्यान दिलाना चाहता हूं।

आप को याद होगा कि मुस्लिम लीग के अध्यक्ष मि० जिन्ना, ने जब उन से कहा कि आप कांग्रेस छोड़ कर मुस्लिम लीग में आ जायें, तो आप की सभी इच्छायें पूरी कर दी जायेंगी। उस समय खान अब्दुलगफ्फार खां का यह उत्तर था कि हम पठान हैं और पठान कभी भी किसी प्रलोभन के आगे अपने निर्णय को नहीं बदला करते।

1947 में जिस समय सारे देश में साम्प्रदायिकता की आग लगी हुई थी, उस समय भी उन के प्रान्त, सीमान्त प्रान्त, में बराबर शान्ति बनी रही, इस का बहुत बड़ा श्रेय सरहदी गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां को है।

अपने जीवन के आखिरी हिस्से में यहां के कुछ व्यक्तियों को लिखे गये पत्रों में और अफगानिस्तान में कुछ व्यक्तियों के साथ हुई बातचीत में खान अब्दुल गफ्फार खां ने अपने दिल का दर्द प्रकट किया है। इस समय उन को दो बहुत बड़ी तकलीफें हैं। एक तो उन्होंने यह लिखा है कि जब कांग्रेस को राष्ट्रीय मुसलमानों की आवश्यकता थी, तो उस समय उस को लालकुर्ती दल, सरहदी पठान और खुदाई खिदमतगार आदि याद आते थे, लेकिन जिस समय देश के विभाजन का प्रश्न आया, उस समय किसी ने मुझ से पूछा तक नहीं और जिन्ना और लियाकत अली खां के साथ बैठ कर देश का विभाजन स्वीकार कर लिया, इस की मुझे बहुत बड़ी तकलीफ है।

उन्होंने यह भी लिखा है कि कांग्रेस ने, जो देश के स्वतंत्रता-आन्दोलन का नेतृत्व करती थी, हम से यह वादा किया था कराची कांग्रेस में कि हम पठानों की आजादी की लड़ाई उसी तरह लड़ेंगे, जिस तरह कि हम भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई लड़ रहे हैं। लेकिन देश के स्वतंत्र होने और शासन में आने के बाद कांग्रेस अपने पुराने वादे को भूल गई, यह भी एक दुख का विषय है।

मेरी अपनी राय यह है कि भारत सरकार ने पखतूनों या पठानों का साथ न दे कर उसी प्रकार एक बहुत बड़ी भूल की, जिस प्रकार उस ने तिब्बत के मामले में अपने मुंह पर पट्टी बांध कर की थी।

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

देश-विभाजन से पहले मि० जिन्ना ने राष्ट्र की परिभाषा करते हुए कहा था कि राष्ट्र वह होता है, जिस की अपनी एक भाषा, संस्कृति और परम्परा हो। इसी आधार पर भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते समय हम ने पठानों को यह आश्वासन दिया था कि अगर हम स्वतंत्र हो गये और पठानों को स्वतंत्रता न मिली तो हम अपनी स्वतंत्रता को उस समय तक अधूरा समझेंगे जब तक पठानों के मुक्ति आन्दोलन की सफलता नहीं मिलती है।

मैं समझता हूं कि भारत सरकार ने अपने दो नैतिक दायित्वों को नहीं निभाया है। पूर्वी बंगाल में देश-विभाजन के समय से लेकर अब तक जो नर-संहार चल रहा है और लाखों की संख्या में हिन्दुओं का बर्हिनिरण हुआ है, जिस का विवरण अभी कुछ दिन पहले पूर्वी पाकिस्तान के नेता, श्री पुलिन डे, ने प्रधान मंत्री को दिया था, उस के बारे में भारत सरकार बिल्कुल मौन रही है। दूसरे, पख्तून आन्दोलन के सम्बन्ध में कांग्रेस के नेताओं न जो वादा किया था, उस की उपेक्षा कर के भी भारत सरकार ने अपना कर्त्तव्य-पालन नहीं किया।

अगर कोई दूसरा देश संयुक्त राष्ट्र संघ में पठानों की आजादी के प्रश्न को उठाता है, तो अपने वादों का स्मरण करते हुए भारत सरकार को सर्वांश में उस का समर्थन करना चाहिए। अगर कोई दूसरा राष्ट्र वहां पर इस प्रश्न को नहीं उठाता है, तो भारत को अपनी ओर से यह मांग करनी चाहिए कि पठानों की भाषा, संस्कृति और परम्परा सर्वथा भिन्न है। आज वे स्वतंत्र हो कर जीना चाहते है। वे पाकिस्तानी भेड़ियों के शिकार हो कर नहीं रहना चाहते हैं। इस लिए पख्तूनिस्तान में जनमत करा के वहां के लोगों को स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने का अवसर देना चाहिए। इसी तरह भारत अपना कर्त्तव्य-पालन कर सकता है।

कभी कभी हमारे मित्र कह देते हैं कि किस समय हम ने पठानों के साथ यह वादा किया था। मैं 1947 से पहले की बात तो बाद में छेड़ूंगा। लेकिन देश के स्वतंत्र होने के बाद 26 सितम्बर, 1947 को अपनी प्रार्थना-सभा में गांधी जी ने जो शब्द कहे थे, उन को मैं ज्यों का त्यों पढ़ कर सुनाना चाहता हूं। गांधी जी ने वे शब्द इस देश और भारत सरकार को सम्बोधित करते हुए कहे थे। गांधीजी ने कहा था: "पाकिस्तान सरकार यदि इन के (पठानों के) साथ न्याय नहीं करती है और अपनी भूल को नहीं सुधारती है, तो यह भारत सरकार का कर्त्तव्य हो जाता है कि उन के विरुद्ध होने वाले अन्याय का मुकाबला करे। मैं मानता हूं कि इस प्रकार का मुकाबला कोई हंसी-खेल नहीं है, लेकिन फिर भी भारत को अपने नैतिक कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।"

24 अप्रैल, 1968 को इसी सदन में श्री समर गुहा के प्रश्न के उत्तर में सरकार की ओर से कहा गया कि भारत सरकार के पास इस बारे में कोई जानकारी नहीं है कि गांधी जी ने राष्ट्र की ओर से सीमान्त गांधी को किसी प्रकार का वचन दिया था। जब यह बात जब अस्सी वर्ष के फ़कीर, सीमान्त गांधी, के कानों तक पहुंची, तो उन्होंने अपने कुछ साथियों को पत्र लिखा कि कराची कांग्रेस में प्रस्ताव और भाषणों के रूप में यह बात आई थी अगर मुझे पता होता कि स्वतंत्र होने के बाद ये लोग अपने वादे से इस प्रकार मुकरने वाले हैं, तो मैं एक दस्तावेज़ पर इन के अंगूठे लगवा लेता ताकि बाद में ये न कह सकते कि हम ने कोई वादा नहीं किया था।

अभी हाल में बादशाह खान के सम्बन्ध में दो पुस्तकें लिखी गई हैं। एक पुस्तक तो गांधी जी के निजी सचिव, श्री प्यारेलाल ने लिखी है, जिस में उन्होंने कहा है कि पठानों के साथ गांधीजी और कांग्रेस के नेताओं ने वादा किया था। दूसरी पुस्तक श्री तन्दूलकर ने लिखी है,

जिस में उन्होंने यह सिद्ध किया है कि उस समय के कांग्रेस के नेताओं ने पठानों के साथ यह वादा किया था और उस वादे को पूरा करना चाहिए।

लेकिन इस सम्बन्ध में एक बड़ी विचित्र बात और यह है कि एक ओर तो सरकार की ओर से कहा जाता है कि पठानों को दिये गये किसी वचन के सम्बन्ध में उसे कोई जानकारी नहीं है और दूसरी ओर उसी सरकार की प्रधान मंत्री, श्रीमती इन्दिरा गांधी, ने श्री तन्दूलकर की पुस्तक की भूमिका में ये शब्द कहे हैं :

> "As one reads through the pages of Tendulkar's book, one is overcome by a feeling of shame. One can only hope that Badshah Khan in his compassion will forgive us for our failures."

मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि श्रीमती इन्दिरा गांधी ने यह भूमिका व्यक्तिगत हैसियत से नहीं लिखी है। बल्कि यह भूमिका एक सरकारी पत्र पर लिखी गई है, जिस पर "प्रधान मंत्री निवास" लिखा हुआ है। प्रधान मंत्री ने लिखा है कि हम को शर्म आनी चाहिए। लेकिन बादशाह खान दयालू हैं, वह हमारी भूल के लिए हमें क्षमा कर देंगे। प्रश्न यह है कि अगर सरकार ने कोई वादा नहीं किया है, तो फिर शर्म किस बात की आ रही है? कम से कम अब तो भारत सरकार को अपनी भूल सुधार लेनी ही चाहिए।

जब कच्छ रण का सवाल आया, तो उस के सम्बन्ध में हुए समझौते को कार्यान्वित करने के बारे में श्री मोरारजी देसाई ने यहां कहा था, "रघुकुल रीति सदा चलि आई, प्राण जायं पर वचन न जाई।" लेकिन पठानों के साथ जो वादा किया था, उस के सम्बन्ध में सरकार "रघुकुल रीति" को क्यों भूल गई है? कच्छ समझौते के समय अपनी दुर्बलता के कारण सरकार को अपना वचन याद आ गया था, लेकिन पठानों को दिया गया वचन उस को क्यों नहीं याद आता है?

अन्त में मैं दो तीन बातें खास तौर पर कहना चाहता हूं। आज बादशाह खान अफ़गानिस्तान में रह कर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। इस समय उन की आयु अस्सी वर्ष की है और वह अपनी जिन्दगी के आखिरी हिस्से में हैं। अगर सरकार में वफ़ादारी और नैतिकता का कुछ भी अंश है, तो भारत के लिए किये गये उन के त्याग का स्मरण करते हुए, अस्सी साल के इस फ़कीर की जिन्दगी के आखिरी हिस्से में वह अपनी भूल का सुधार करे। हमारी उपेक्षा का रूप यह है और पाकिस्तान आज उन को कहता है यह गद्दार हैं, भारत के एजेंट हैं। अब बताइए वह कहां जा कर खड़े हों? एक ओर हमारी यह अपेक्षा और दूसरी ओर पाकिस्तान भारत के सहयोगी होने के नाते, विभाजन का विरोधी होने के नाते, उन के साथ में यह व्यवहार कर रहा है।

इसलिए मैं अन्त में यह कहना चाहता हूं कि उन के साथ हम ने जो व्यवहार किया है, उस कलंक को भारत के माथे से धोने का एक ही प्रकार है और वह प्रकार यह है कि इस समय भारत के सभी वर्गों की ओर से एक शिष्टमंडल बादशाह खान के पास जाना चाहिए जो सारे देश का प्रतिनिधित्व करने वाला हो। वह उन को भारत आने का आमंत्रण दे। वह यह कहते हैं कि मैं तफरीह करने के लिए भारत आना नहीं चाहता। अगर मेरे मिशन में भारत सरकार कुछ सहारा लगाना चाहती है तो मैं जरूर आना चाहता हूं। उन को हम पूर्ण आश्वासन दें कि हम उन के मिशन में सहयोग देना चाहते हैं। उन को यहां लाया जाय और उन से पूछा जाय कि उन की मांग क्या है।

एक और बात जो कह कर मैं बैठ जाना चाहता हूं वह यह कि इस से बड़ी लज्जा की कोई बात नहीं हो सकती कि बादशाह खान जैसा व्यक्ति जिस ने देश की आजादी को गांधी जी के कन्धे से कन्धा लगा कर हमारा साथ दिया और न केवल उन्होंने बल्कि सारे

[श्री प्रकाशवीर शास्त्री]

पठानों ने साथ दिया, उनके लिये 20 साल मे चर्चा चल रही है। आज जब भारत सरकार के सामने इस का उत्तर देने का मौका आया है तो प्रधान मंत्री यहां उपस्थित नहीं हैं। मैं आदर करता हूं अपने मित्र श्री बाली राम भगत का, मैं आदर करता हूं अपने मित्र श्री सुरेन्द्र पाल सिंह का, अपने विभाग की जिम्मेदारी को वह पूरी निष्ठा से निभाते हैं। लेकिन यह बात ऐसी नहीं थी कि इन को इतना हलके ढंग से लिया जाता। मैं समझता हूं कि अगर प्रधान मंत्री जी की ओर से कोई आश्वासन दिया जाता तो बादशाह खान के लिए उस की कीमत होती और दुनिया के लिए भी उस की कीमत होती।

अन्त में मैं यही कहना चाहता हूं कि सरकार अपनी भूल का सुधार करे और आगे के लिए कोई ऐसा मार्ग अपनाए जिस से राष्ट्रीय संग्राम के एक योद्धा के मन में जो कुछ विपरीत रेखाएं खिच गई हैं वह रेखाएं मिट सकें।

SOME HON. MEMBERS *rose*—

MR. DEPUTY-SPEAKER: You have a right to put a question. You will get an opportunity.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI B. R. BHAGAT): Let them ask the questions.

MR. DEPUTY-SPEAKER: I following a procedure. I do not want to change it, it is not proper.

SHRI B. R. BHAGAT: Has the procedure changed?

MR. DEPUTY-SPEAKER: I followed it during the last session, and today I am following it. Names have come, but they will be called afterwards.

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI SURENDRA PAL SINGH): Before I begin my reply to this discussion I have to submit that the Prime Minister was herself very keen to be present in the House and to participate in this discussion, but she has an important engagement with a delegation, and this engagement had been made quite some time back which she could not get out of, and that is the reason why she is not present here and not that she does not want to be present or she does not regard this subject to be important enough.

The subject matter of this discussion is of such a nature that it touches the emotional chord in the hearts of all Indians who know what tremendous sacrifices Badshah Khan and his organisation of Red Shirts made for the attainment of the independence of this subcontinent and also those who know how much more he has suffered subsequent to 1947 in championing and espousing the cause of Pakhtoonisthan.

It is an irony of fate that such well-known, renowned, revered and valiant a freedom fighter, for whom we have the greatest respect, should have been incarcerated, put behind the bars, by his own countrymen soon after 1947, and subjected to a great deal of physical discomfort and ill-treatment in the jails of Pakistan for a period of nearly 15-16 years. This long imprisonment has completely undermined and shatered his health, and we feel very sorry for him and all our sympathies are with him. In the present-day world it would be difficult to find a national leader of his stature who has sacrificed so much for the independence of his motherland and for the cause that he is espousing, as Badshah Khan has done.

Having said all this, and after paying this small tribute to this great Gandhian leader, I beg to submit that however strongly we may feel on this issue as individuals, our national policy in this regard has to be a balanced and a rational one, conditioned by a number of important factors. One of them is the factor of international relationship, the other factor is of our own national interest, and thirdly the interests of the Pakhtoons themselves. Now this is a very complicated and delicate affair in which relations between a number of countries are involved, the relation between India and Pakistan, the relation between Pakistan and Afghanistan and relation between India and Afghanistan. We should not do something or say something which would cause tension between these countries and also create an atmosphere of cold war. That would ultimately harm the cause of the Pakhtoons themselves. It has been said.... (*Interruptions*)

SHRI SAMAR GUHA: (Contai): You have taken it so lightly. Most ungrateful act.

MR. DEPUTY-SPEAKER: These interruptions will deprive the time for questions. I will not permit any interruptions. You will get an opportunity to put the question. I will not allow any question now.

SHRI SAMAR GUHA: I am not putting the question now. You had been one of the valiant fighters of the Freedom Movement of India. This is an important matter. If the Prime Minister could not come, at least the Deputy Prime Minister or even one or two of her cabinet colleagues who had worked with Khan Abdul Ghaffar Khan should have been present.

MR. DEPUTY-SPEAKER: That protest has already been recorded.

SHRI B. R. BHAGAT: Is he showing the Gandhian spirit, Sir?

SHRI SAMAR GUHA: I am a follower of Netaji. I know how to call a spade a spade. The Congress leaders have made the greatest betrayal. 97% of the frontier people are Muslims. They denied the two national theory. They challenged the Muslim League.

MR. DEPUTY-SPEAKER: That is right.

SHRI S. KUNDU (Balasore): I will appeal to him not to raise cold war issues so far as Khan Abdul Ghaffar Khan is concerned.

SHRI B. R. BHAGAT: It is very objectionable. I am much more senior to him as a Member of the Parliament. What is the meaning of this feudal attitude? It was asked why not the Minister be present. A man should be known by the work. (*Interruptions*)

SHRI SAMAR GUHA: We have worked with Khan Abdul Gaffar Khan or at least had the privilege to sit at his feet. (*Interruptions*)

MR. DEPUTY-SPEAKER: When the Minister is replying, he is replying on behalf of the Government. He will be taken seriously. Hon. Mr. Shastri raised it and it has been recorded.

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY (Kendrapara): Whatever it may be it is a disgrace that we have been told here that they do not propose to do anything because of the cold war fear. At least such a statement should not come at this moment. If you can do anything, you do it but don't bring in the cold war.

श्री रवि राय (पुरी) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं एक विनती करना चाहता हूं। भगत साहब खुद संयुक्त राष्ट्र संघ गये थे. वहां अफगान सरकार की ओर से पख्तुनिस्तान का समर्थन करने के लिए एक प्रस्ताव आया था, वह बतलायें कि उन्होंने उस पर क्या किया ?

MR. DEPUTY-SPEAKER: That will come at the time of clarification.

श्री रवि राय : उपाध्यक्ष महोदय, इन्होंने कुछ नहीं किया।

श्री श्रीचन्द गोयल : (चण्डीगढ़) : ये खान साहब के ज़ख्मों पर नमक छिड़क रहे हैं।

श्री जार्ज फरनेन्डीज (बम्बई दक्षिण) : आपने क्या किया, बतलाइये ?

SHRI SURENDRA PAL SINGH: It has been said on a number of occasions that the Government of India's policy in regard to the question of Pakthoonistan is a weak policy and a vague policy. Our policy in this regard has been made clear to the House on a number of occasions as to what our stand is and the hon. Members know about this. For their benefit, with your permission, I would like to quote what our Foreign Minister, as far as back as November, 1965 had to say in this connection when winding up the debate on foreign affairs in this House. I quote his actual words:

> "With regard to the Pakthoonistan issue, we are fully aware that the fundamental freedom and the natural aspirations of the brave Pakthoons have been consistently denied to them, and their struggle has got our greatest sympathy, and we will certainly support

[Shri Surendra Pal Singh]

> the efforts that Khan Abdul Ghaffar Khan might undertake in that direction."

This policy was again reiterated.

श्री जार्ज फरनेन्डीज : यह सब बोलियां मत सुनाइये, आप बोलते बहुत हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ में आपने क्या किया, यह बतलाइये ?

SHRI SURENDRA PAL SINGH : You can ask questions afterwards. This policy was again reiterated in May, 1966 by the then Minister of State who made it clear once again, and I would like to quote his words :

> "The Government have every sympathy for the just demands of the Pakthoons and will do whatever is constitutionally possible to help them."

SHRI GEORGE FERNANDES : What have you done ?

श्री रवि राय : 1965 के बाद तीन साल बीत गये, इस बीच आपने क्या किया, यह बतलाइये ?

श्री रणधीर सिंह (रोहतक) : कितना बड़ा स्टेटमेन्ट है, आप कैसी बातें करते हैं।

श्री रवि राय : यू० एन० ओ० में इस मामले को क्यों नहीं उठाया ?

MR. DEPUTY-SPEAKER : When the time comes for putting questions, for clarification, it can be done. Let him finish his speech.

SHRI SURENDRA PAL SINGH : This poilcy stands even today and there has been no change in that whatsoever.

SHRI GEORGE FERNANDES : No change in the statement !

SHRI SURENDRA PAL SINGH : In regard to the achievement of the objectives of Khan Abdul Ghaffar Khan, the initiative will have to be taken by the Pakthoons themselves.

It has been said that some help was promised to him in this connection and that help was not given by the Government of India. Now, it is true that Badshah Khan had told a number of people who had gone from this country to meet him over there that he had on a number of occasions asked for India's help, but he has always spoken in very general and vague terms. He has never spelt out precisely what help is needed.

श्री जार्ज फरनेन्डीज : डा० लोहिया से उन्होंने कहा था और डा० लोहिया ने उन के सन्देश को लाल बहादुर शास्त्री जी को दिया था। जब डा० लोहिया उन से मिले थे तो उन्होंने कहा था कि मुझे लड़ाई के लिये हवाई जहाज चाहियें। उस के बाद डा० साहब शास्त्री जी को मिले थे और उन को बताया था।

SHRI SAMAR GUHA : He has categorically outlined his minimum demands: His minimum demand is that India should raise the cry of the Pakthoons in the United Nations and in that case he will come to India. (*Interruption*)

SHRI GEORGE FERNANDES : He has asked for bombers and fighters.

उन्होंने डा० लोहिया से यह मांग की थी और उन्होंने शास्त्री जी को बताया था।

SHRI SURENDRA PAL SINGH : May I submit that ever since Badshah Khan went to Afghanistan, he has met our ambassador there on a number of occasions; they meet quite frequently, and I can say quite authoritatively that he has never on any occasion told our ambassador as to what kind of help he needs. That is an absolute fact.

श्री रवि राय : उन्होंने डा० लोहिया को कहा था और डा० साहब ने शास्त्री जी को कह था। लोक सभा में भी यह बात आई थी। एम्बेसडेर को कहने का क्या मतलब है— यह आप क्या बता रहे हैं।

SHRI SURENDRA PAL SINGH : We have no information. I have just told the House what he has told our representative, our ambassador, in Afghanistan. What he has told privately, we have no information.

SHRI SAMAR GUHA : You know there was an official delegation sent; You know the exact nature of the help that he wants. (*Interruption*).

SHRI S. KUNDU : On a point of order, Sir. He says that Badshah Khan has made no such request to our Ambassador. Let him say that if Badshah Khan makes such a request to our Ambassador, they will fulfil it.

MR. DEPUTY-SPEAKER : It is a hypothetical question. I cannot compel the minister to reply to it.

श्री जार्ज फरनेन्डीज : उपाध्यक्ष महोदय, मैंने सीधा प्रश्न रखा है. डा० राम मनोहर लोहिया खान अब्दुल गफ्फार खां से मिले थे और उन का संदेशा उन्होंने लाल बहादुर शास्त्री जी को दिया था। उन्होंने कहा था कि हम को लड़ाई के लिए जहाज दे दो। आज डा० लोहिया नहीं हैं, लेकिन ये उन के शब्द हैं। आज मंत्री जी कहते हैं कि हमारे एम्बसेडर से उन्होंने नहीं कहा। आप कहते हैं कि एम्बेसेडर से मिलें, नौकरशाह से मिलें। लोहिया जी मिले थे, आप उनकी बात नहीं मानते।

MR. DEPUTY-SPEAKER : The ambassador is the authoritative representative of the Government.

SHRI SURENDRA PAL SINGH : He might have said anything in his private correspondence to somebody, but he has never conveyed the message to the Government of India through our proper agent. (*Interruptions*).

SHRI SAMAR GUHA : 15 days before, Shri Jaya Prakash Narain met Badshah Khan. Shri Jaya Prakash Narain is nobody, but the Ambassador is more important! (*Interruptions*).

SHRI GEORGE FERNANDES : They are shameless people, cowards, impotent people.

MR. DEPUTY-SPEAKER : I will have to warn the hon. member. This is not the language to be used in this House. (*Interruptions*).

SHRI SURENDRANATH DWIVEDY : I would suggest the closure of this debate instead of having a debate like this. (*Interruptions*).

MR. DEPUTY-SPEAKER : Under the direction, the Minister may place that statement on the Table of the House.

The House stands adjourned to meet again tomorrow morning.

18 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Thursday, November 14, 1968/*Kartika* 23, 1890 (*Saka*).

L53LSS/68—1010—11-3-69—GIPF.